वूप्पिट्टी स्टूरी

क्विट्ल-रमपिट की केट अपनी माँ के साथ पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक छोटे से घर में रहती थी. उनके पास न ही अच्छे कपड़े थे और न ही पर्याप्त खाना. लेकिन उनके पास एक सुंदर शूकरी थी जिसका नाम ग्रम्फी था और जो शीघ्र ही कुछ बच्चों को जन्म देने वाली थी.

हर सुबह केट ग्रम्फी की नाँद में बचाखुचा खाना डाल देती थी. हर दिन केट ग्रम्फी को कान के पीछे गुदगुदाती थी और उसे कहानियाँ सुनाती थी. हर शाम केट बाँसुरी पर ग्रम्फी को उसका मनपसंद संगीत '*शूकरों की रंगरलियाँ*' सुनाती थी.

एक सुबह केट ग्रम्फी की नाँद में खाना डालने के लिए शूकरों के बाड़े में गई तो उसने देखा कि ग्रम्फी पीठ के बल लेटी हुई थी. वह रो रही थी, करहा रही थी और उसका चेहरा साबुन की तरह सफेद हो गया था.

“माँ,” केट चिल्लाई, “जल्दी आओ. हमारी ग्रम्फी बीमार है.”

ग्रम्फी को ठीक करने के लिए केट और उसकी माँ ने कई घरेलू उपायों का प्रयोग किया. उन्होंने ग्रम्फी को गर्म फलालैन में लपेटा. उन्होंने उसे चाय और टोस्ट खिलाए. बुरी बला से उसे बचाने के लिए उसके गले में रोवान के बेरों की माला उन्होंने बाँध दी. लेकिन ग्रम्फी की बीमारी ठीक न हुई. वह कमज़ोर होती गई, होती गई. जब केट ने *‘शूकरों की रंगरलियाँ’* सुनाई तो ग्रम्फी विलाप करने लगी.

उदासी से भरी केट की माँ एक पत्थर पर बैठ गई. केट भी निकट बैठ गई. जैसे ही सूर्यास्त हुआ, वह दोनों बेचारी ग्रम्फी के लिए रोने लगीं. वह ठीक ही न हो रही थी.

स्कॉटलैंड के लोग मानते हैं कि शूकर हवा को देख सकते हैं और वो आवाज़ें भी सुन सकते हैं जो हम लोग नहीं सुन पाते. हालांकि वह बीमार थी, ग्रम्फी ने अपना सिर उठाया जैसे कि उसने कुछ अजीब सा देखा हो या सुना हो. तभी भूसे और धूल को घुमाता एक चक्रवात पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगा. “वह क्या है?” केट ने पूछा. चक्रवात के बीच से हरे लबादे में लिपटी एक महिला बाहर आई, उसका चेहरा भी लबादे में लिपटा हुआ था. उसने एक लाठी पकड़ रखी थी जो उसके जितनी ही लंबी थी और उसके कंधे पर एक उदास पक्षी बैठा था.
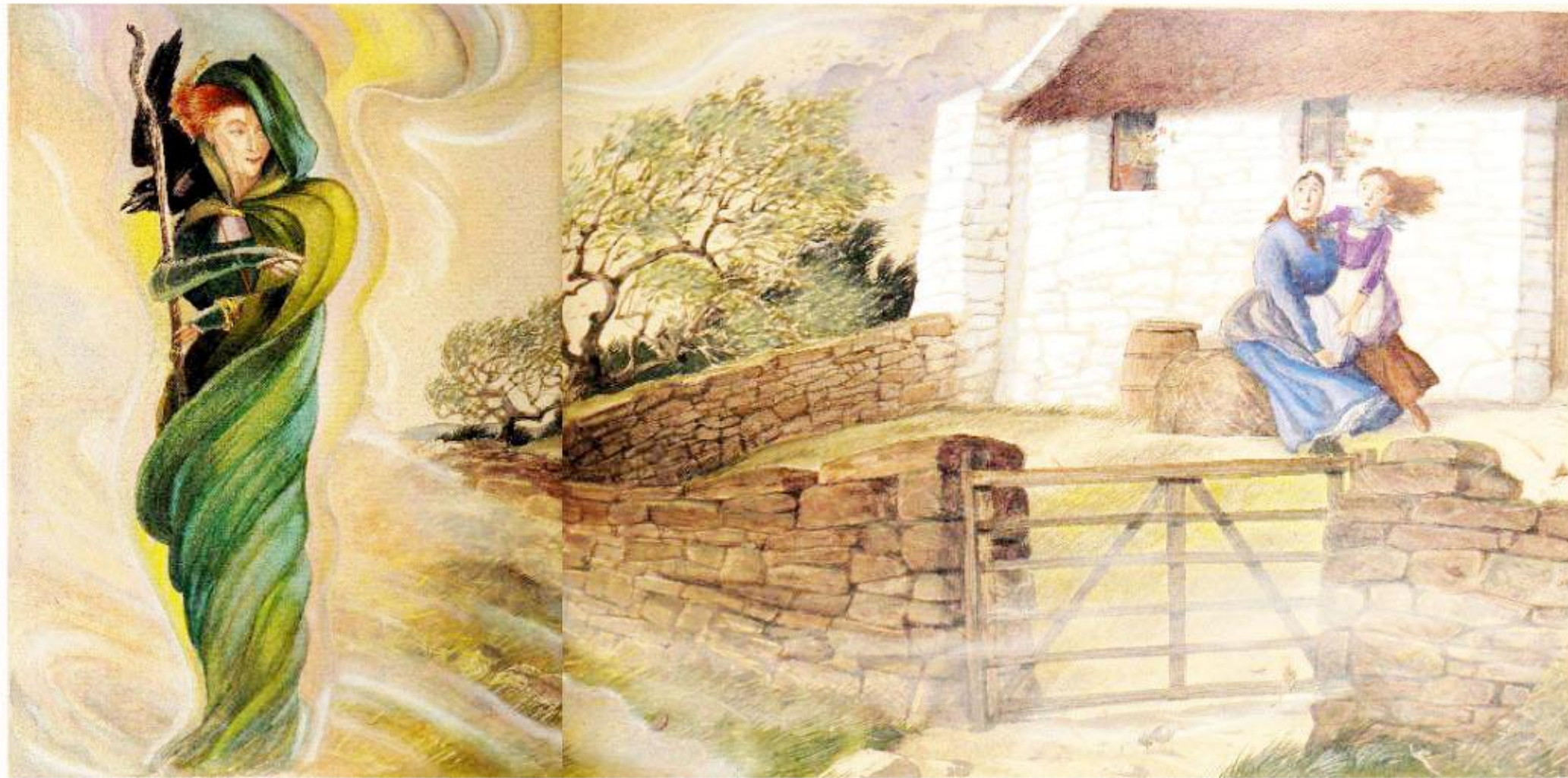
"किट्टल-रमपिट की अच्छी महिला," हरे लबादे में लिपटी औरत ने कहा, "अगर मैं तुम्हारे शूकर को ठीक कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

"जो भी आप कहें," गरीब महिला ने कहा और झुक कर उस औरत का अभिनंदन किया. उसने हरे लबादे के किनारे को चूमना चाहा, लेकिन हरी औरत ने उसे रोक दिया.

"यह झुकना और चूमना बंद करो," उसने कहा. "अगर तुम अपने शूकर को स्वस्थ देखना चाहती हो तो अपने अँगूठे गीले कर के हम एक सौदा करते हैं."

केट की माँ और हरी औरत ने अपने अँगूठे जीभ से चाट कर गीले किये और आपस में मिलाये. फिर हरी औरत शूकरों के बाड़े में गई. उसने बीमार शूकरी को घूर कर देखा और बड़बड़ाने लगी. केट और उसकी माँ को लगा कि वह कह रही थी:

टिपटिप टिपटिपवा

जादुई पानी वा-वा-वा.

अपने झोले से उसने एक छोटी सी बोतल निकाली और उसमें रखा हरे रंग का तेल अपना अँगुलियों पर लगाया. जैसे ही वह तेल उसने शूकर की नाक और कानों के पीछे और पूँछ की नोक पर मला, ग्रम्फी खड़ी हो गई और घुरघुराती हुई खाने के लिए नांद के पास चली आई.

केट की माँ बहुत प्रसन्न हुई. "हमारी ग्रम्फी को ठीक करने के लिए मैं तुम्हें क्या भेंट दूँ?"

"तुम देखोगी कि मैं लालची नहीं हूँ," हरी औरत ने कहा. "जो मुझे चाहिए और जो मैं लेकर ही रहूंगी, वह है तुम्हारी बेटी."

किट्टल-रमपिट की अच्छी महिला चीख पड़ी क्योंकि वह जानती थी कि उसने एक परी के साथ सौदा किया था. वह रोने लगी और विनती करने लगी, वह भीख मांगने लगी और बुरा-भला कहने लगी.

"तुम्हारा रोना-चिल्लाना कोई काम न आयेगा," परी ने कहा. "लेकिन एक बात मैं तुम से अवश्य कहूँगी: परियों के नियम के अनुसार आज से तीसरे दिन तक मैं तुम्हारी बेटी को नहीं ले जा सकती, और अगर तुम मेरा नाम जान लोगी तो उस के बाद बिलकुल भी नहीं."

शूकरों के बाड़े से बाहर आकर हरी औरत फिर से चक्रवात के भीतर चली गई और पहाड़ी के नीचे गायब हो गई.

किट्टल-रमपिट की अच्छी महिला उस रात नहीं सोई और न ही अगली रात और उसके अगली रात भी नहीं. सारे समय वह या तो वह अपनी बेटी को गोद में बिठाकर रोती रही या फिर एक मोटी सी किताब में लिखे नाम जल्दी-जल्दी पढ़ती रही.

"शायद हरी औरत का नाम जीन है," माँ ने कहा. "या शायद मारग्रेट है. या मायेरि. या इसाबेल. या एगनिस." एक के बाद एक किताब के पन्ने वह पलटती गई. पढ़ने में वह इतनी व्यस्त हो गई थी कि ग्रम्फी को चुपके से शूकरों के बाड़े से बाहर निकल कर पहाड़ी के नीचे जाते उसने देखा ही नहीं.

“ग्रम्फी, यहाँ वापस आओ,” शूकरी के पीछे-पीछे भागते हुए केट ने चिल्ला कर कहा. ग्रम्फी ने उसकी बात न सुनी. वह जंगल के बीच भागती गई. वह तैर कर नदी पार कर गई. जब ग्रम्फी एक खदान के ऐसे गड्ढे में उतर गई जिसके मध्य में एक पानी का सोता था और चारों ओर कंटीली झाड़ियाँ, केट भी पीछे दौड़ी आई.

केट को वहाँ चरखा चलने और किसी के गाने की आवाज़ सुनाई दी. वह एक झाड़ी के पीछे छिप गई. ग्रम्फी उसके साथ थी. उसने हरी औरत को चरखा चलाते देखा. वह हरे रंग की एक पोशाक बना रही थी जो वैसी ही जैसी उसने पहन रखी थी, बस थोड़ी छोटी थी.

"कोर्बी," हरी औरत ने कंधे पर बैठे पक्षी से कहा, "क्या तुम्हें लगता है कि वह लड़की हरी पोशाक में अच्छी लगेगी?"

"काव," पक्षी ने उत्तर दिया. हरी औरत कर्कश आवाज़ में हँसने लगी. चरखा तेज़-तेज़ घूमने लगा, इतना तेज़ कि आँधी सी चलने लगी. हरी औरत उछल कर खड़ी हो गई और नाचने, कूदने लगी. मन ही मन वह दुष्टता से हँस रही थी. जैसे ही वह गाने लगी, पक्षी उसके इर्द-गिर्द घूमने लगा.

आज रात सूर्यास्त पर वह लड़की मेरी हो जायेगी

वूप्पिट्टी स्टूरी है मेरा नाम वो जान कभी न पायेगी.
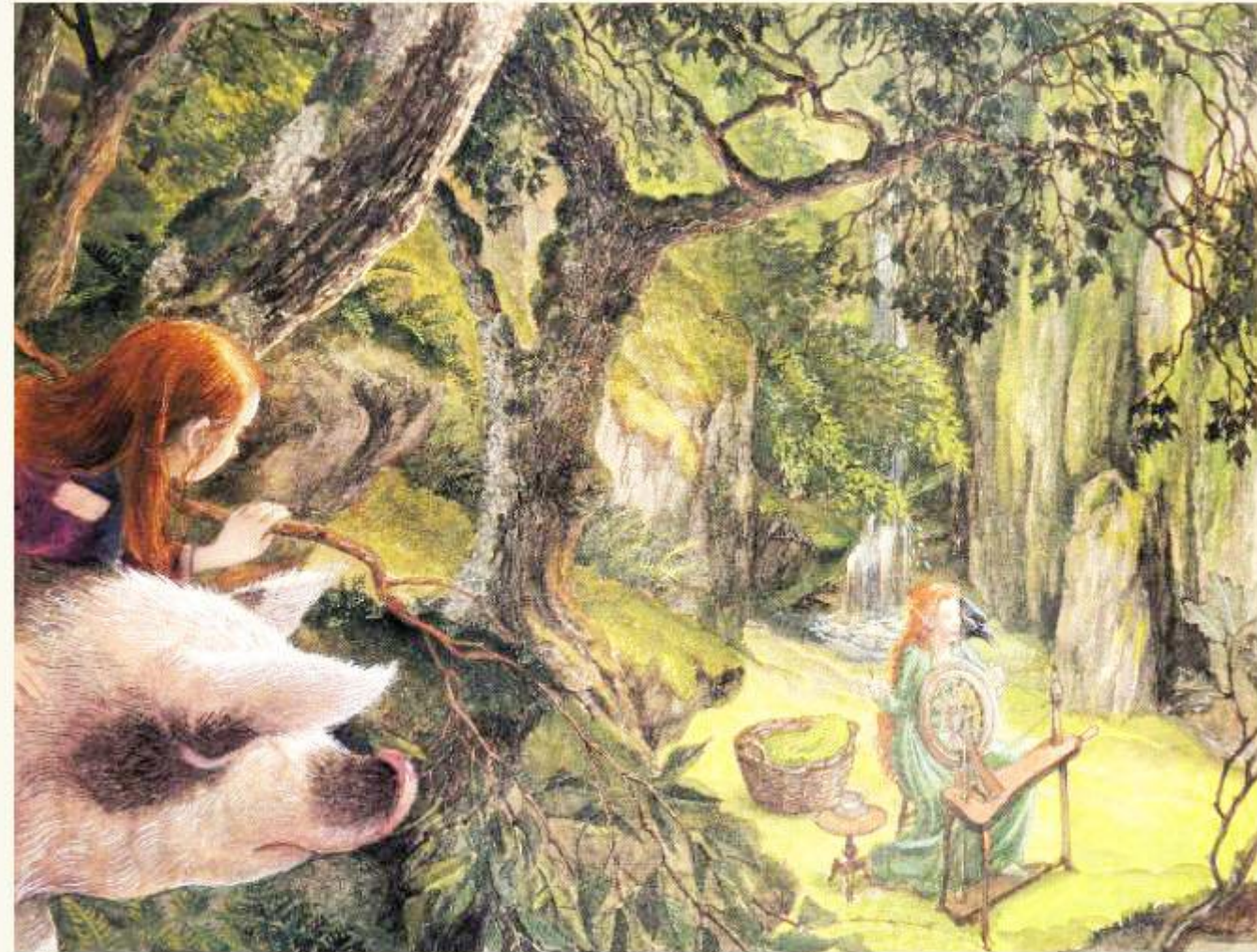
“श्श्श! ग्रम्फी,” केट ने धीमे से कहा, “चलो, घर चलें और माँ को इस जंगली परी का नाम बता दें.” बिना शोर किये शूकरी और लड़की उस खदान से बाहर आ गये. झटपट तैर कर उन्होंने नदी पार की. झटपट भाग कर जंगल के पार गये. लेकिन तभी एक चक्रवात जो “वूप्पिट्टी! वूप्पिट्टी” चिल्ला रहा था घूमता हुआ उनके पास से निकल कर पहाड़ी के ऊपर चला गया.

केट की माँ पत्थर पर बैठी थी और झटपट किताब में लिखे नाम पढ़ रही थी कि चक्रवात वहाँ पहुँच गया और हरी औरत बड़े उत्साह के साथ उसके अंदर से बाहर आ गई.

"किट्टल-रमपिट की अच्छी महिला," परी ने कहा, "तुम जानती हो कि मैं क्यों आई हूँ. उठो और अपनी लड़की मुझे दे दो."

"अगर तुम्हारा नाम *धूल का अंधड़* है, तो नहीं," केट की माँ ने कहा.

हरी औरत हँसने लगी. पक्षी भी हँसने लगा.

"क्या *हरी स्कर्ट* है? माँ बोलती रही. "या *तूफानी औरत*? या *संध्या चक्र*?"

"लड़की मेरी हो गई," हरी औरत ने कहा.

“शायद तुम्हारा नाम *नव-मंजरी* है. या *बनफूल* है. या *भटकटैया* है. या *धूमल* है.”

“मेरे पास इतना समय नहीं है,” परी ने बेताबी से कहा.

“तो क्या *लिली क्रोक्रोडिली* है? या *फिड्डलटू*? या *रिड्डलडीडी*?”

“लड़की मुझे दे दो, अभी!” हरी औरत चिल्लाई.

“मेरी अच्छी पड़ोसिन,” माँ ने विनती की, “मेरी बेटी को छोड़ दो और मुझे ले जाओ.”

“क्या तुम मूर्ख हो?” परी ने हँसी उड़ाते हुए कहा. “तुम्हारी बेटी का सौदा हुआ था. मैं सिर्फ तुम्हारी बेटी को लेकर जाऊँगी.”

“मेरी बेटी को कोई भी मुझ से नहीं छीन सकता,” किट्टल-रमपिट की अच्छी महिला ने मुट्ठियाँ बाँधते हुए कहा.

“माँ,” पहाड़ी के ऊपर दौड़ कर आती हुई केट ने कहा. “जो अच्छा शिष्टाचार आपने मुझे सिखाया था आज आप ही भूल गईं? महान, घमंडी राजकुमारी *वूप्पिट्टी स्टूरी* का अभिनंदन करने का यह कोई ढंग नहीं है.”

परी हवा में उछल पड़ी और धड़ाम से नीचे ज़मीन पर आई. फिर गुस्से में चीखती और तेज़ी से घूमती पहाड़ी के नीचे चली गई.

केट और उसकी माँ ने एक-दूसरे के हाथ पकड़ लिए और नाचते-नाचते गाने लगीं:

वूप्पिट्टी हे! वूप्पिट्टी हा!

वूप्पिट्टी स्टूरी नाम है उसका.

“ग्रम्फी कहाँ है?” केट की माँ ने पूछा.

“वह मेरे साथ जंगल में थी,” केट ने बताया

“वूप्पिट्टी स्टूरी के लिए अच्छा होगा कि ग्रम्फी के नाक के बाल को भी चोट न पहुँचाये,” उसकी माँ ने कहा.

माँ और बेटी भाग कर पहाड़ी से नीचे आये. वहाँ धूल में लेटी उन्हें ग्रम्फी मिली. उसके साथ तीन बच्चे थे, जो उसका दूध पी रहे थे.

अब हर सुबह केट ग्रम्फी के लिए और कर्ली टेल, गफ्फी और जिग के लिए नांद में बहुत सारा खाना डाल देती थी. हर दिन केट ग्रम्फी और उसके बच्चों को कान के पीछे गुदगुदाती थी और उन्हें वूप्पिट्टी स्टूरी की कहानी सुनाती थी. और हर शाम जब केट बाँसुरी बजाती थी तब '*शूकरों की रंगरलियाँ*' गाने की तान पर किट्टल-रमपिट के चारों शूकर गुरगुराते थे.

समाप्त